द्वारा लिखित सी.आई.सी.एम.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:51 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

''परमेश्वर का मानव रूव में अवतरण यीशु''
स्व. डॉ. विजय लाल
''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।'' (यूहन्ना 1:1)
''और वचन देहधारी हुआ .... '' (यूहन्ना 1:14)

बड़ा दिन इसलिए मनाते हैं क्योंकि उस दिन प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ। बड़े दिन का सन्देश है कि ईश्वर मनुष्य बन गया, ईश्वर ने मानव रूप धारण किया, मानव के समकक्ष हो गया – मानव स्वरूप में दृश्य होकर – जगत में विचरण किया।

ईश्वर के मानव स्वरूप में अवतरित होने की प्रक्रिया को अवतार – अंग्रेजी में Incarnation कहते हैं।

यूहन्ना अपने सुसमाचार का प्रारम्भ करते हैं ''आदि में वचन था'' "In the beginning was the Word". ग्रीक में "Logos" अर्थात् "the mind of God" ईश्वरीय आत्मा। यही "mind of God" ''ईश्वरीय आत्मा'' है। वचन देहधारी हो गया (The Word became flesh), ईश्वरीय आत्मा ने मानव स्वरूप ग्रहण कर लिया।

प्रभु यीशु की सांसारिक देह ईश्वरीय मन पर चिन्तन, मनन वाली देह नहीं थी उस देह ने ईश्वर को आत्मसात नहीं कर लिया, वह देह स्वयं ईश्वरीय मन है – ईश्वरीय आत्मा है, ईश्वरीय Principle है, Logos है। ईश्वर ने उसके द्वारा सत्य अभिव्यक्त नहीं किया ईश्वर स्वयं अभिव्यक्त हुआ – यह स्वअभिव्यक्ति है ईश्वर की प्रभु यीशु मसीह में। स्वसंवाद Self Communication है, ईश्वर का मनुष्य को। ईश्वर और मनुष्य के बीच में – जो अनन्त आध्यात्मिक सम्बन्ध है वह एक दार्शनिक निराकार शब्दावली नहीं है – वह एक निश्चित ठोस देह है – एक व्यक्ति है – प्रभु यीशु मसीह। यीशु व्यक्तिकरण है परमेश्वर का, Personification है। मसीही इस दावे को विशिष्ट मानते हैं। क्या मापदण्ड है? क्या परख है कि यीशु अवतार है?

इस सन्देश में मेरा उद्देश्य यह है कि यीशु के ''अवतार'' होने के दावे को मानवीय तर्क के आधार पर जांचें। धर्म शास्त्र के दावे को अभी अलग रखें, मात्र अवतार की घटना के पहलुओं पर विचार करें। मानवीय तर्क के आधार पर जांचें कि यीशु मसीह इस कसौटी पर खरे प्रतीत होते हैं या नहीं? प्रभु यीशु का जन्म क्या अवतार की घटना है।

ईश्वर असीम है, सर्वशक्तिमान है, अनन्त है। यदि वह मनुष्य बनता है जो सीमित है जिसका निश्चित सीमित अस्तित्व है, तो यह घटना एक सामान्य घटना नहीं है। यदि ऐसी महान अलौकिक अद्वितीय घटना घटित होती है तो उसके तत्व क्या होने चाहिए? कैसी वह घटना होनी चाहिए?

प्रथम बात – यदि ईश्वर मनुष्य बन जाए तो यह घटना अनन्त के लिए इतनी महत्वपूर्ण होगी कि उसकी तैयारी होगी। धरती तैयार की जाएगी, सृष्टि तैयार की जाएगी कि अवतार की घटना के उद्देश्य की पूर्ति हो सके।
यीशु के अवतरण की घटना में हम यह तैयारी देखते हैं।

द्वारा लिखित सी.आई.सी.□म.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:51 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

प्रकृति की तैयारी है□ लिखा है – ''सृष्टि बड़ी पीड़ा से परमेश्□वर के पुत्रों के प्रगट होने की राह देखती है-'' – प्रसव पीड़ा है प्रकृति की□

इतिहास की तैयारी है□ सही समय पर, सही बिन्□दु पर अवतरण होना है कि वचन सार्थक हो□ बाइबिल में लिखा है – ''समय की परिपूर्णता "In the fullness of time" पर प्रभु का जन्□म हुआ'' (गलतियों 4:4)□ समय की प्रतीक्षा थी□ जब समय परिपक्□व हुआ तो प्रभु यीशु का जन्□म हुआ□ प्रभु यीशु मसीह के अवतरण के लिए□ सारी सृष्टि, प्रकृति और ईश्□वरीय शक्ति की तैयारी का अनुभव करना है तो बाइबिल में देखिये – ईश्□वरीय प्रेरणा से 1600 वर्षों में संकलित, तीन विभिन्□न मूल भाषाओं में, 2 महाद्वीपों में, 60 युगों में लगभग 40 विभिन्□न लोगों द्वारा लिखी गई – पर सम्□पूर्ण पुस्□तक में □क अभूतपूर्व समानता, समन्□वयता, □क शृंखला, □क सम्□बद्धता, □क लयबद्धता और □क आन्□तरिक□ क्ता है□ □क लक्ष्□य है बाइबिल का कि इंगित करे उस महानतम घटना की ओर जिसे हम कहते है ''अवतरण'' ईश्□वर का अवतरण – यीशु के रूप में ईश्□वर के मानव बन जाने की अद्वितीय अपूर्व घटना□ जी हां, यह घटना होगी, तो तैयारी होगी और इस तैयारी का वर्णन ''बाइबिल का पुराना नियम'' है□

दूसरी बात यह है कि – यदि ईश्□वर जो अनन्□त है □क सीमित मानव बनता है तो हम यह अपेक्षा कर सकते है कि इस मानव जीवन में उसका प्रवेश और पदार्पण असामान्□य हो□

कुंवारी से जन्□म □क ऐसी ही असामान्□य घटना है□ इसकी भविष्□यवाणी सृष्टि के प्रारम्□भ से ही थी और उसके जन्□म से सात सौ वर्ष पूर्व पुन□ यशायाह द्वारा की गई□ असामान्□यता यह है कि यीशु मानवीय प्रजनन प्रक्रिया द्वारा नहीं किन्□तु पवित्र आत्□मा द्वारा गर्भ में आये□ आश्□चर्यजनक तथ्□य यह भी है जो जस्टिन मार्टेयर कहते है कि वह कुंवारी गर्भवती हुई और कुंवारी ही रही□

जन्□म से समय पूर्व में सितारे का दिखाई देना, स्□वर्गदूतों का आनन्□द मनाना आदि अन्□य असामान्□य घटना□ं है जो मूल असामान्□य घटना का प्रतीक मात्र है□

तीसरी बात यह है – कि यदि ईश्□वर मानव बनता है तो उस अवतरित मानव के जीवन में ईश्□वर की परिपूर्णता, महानता, दिव्□यता और पवित्रता प्रदर्शित होगी□
प्रभु यीशु मसीह के जीवन में और चरित्र में यह सारी अपेक्षा□ं सौ प्रतिशत पूर्ण हुई हैं□ ऐसा सुन्□दर दोषरहित, पापरहित दिव्□य चरित्र कहीं अन्□यत्र देखने को नहीं मिलता□ (कुलुस्सियों 1:19) में उसी के वर्णन में लिखा है ''पिता की प्रसन्□नता इसी बात में है कि उसमें अर्थात् यीशु में सारी परिपूर्णता वास करे□ ''

ऐसा परिपूर्ण पापरहित जीवन कि उसने स्□वयं □क बार चुनौती दी ''कौन है जो मुझे पापी ठहरा सकता है'' (यूहन्□ना 8:29) में वह कहता है कि ''मै सर्वदा (याद रखिये, सर्वदा) वही काम करता हूं जिसमें वह अर्थात् पिता प्रसन्□न होता है''□

जब कोई ईश्□वर के ज्□यादा नज़दीक होता है तो ईश्□वर की असीम पवित्रता के परिपेक्ष्□य में उसे अपने पाप का और अधिक गहरा □हसास होता है – यीशु परमेश्□वर के समीप था – किन्□तु पाप नहीं था – अत□ पाप का कोई यह □हसास भी नहीं था□

उसके मित्रों ने कहा कि वह पाप रहित था□ पतरस ने उसे निर्दोष और निष्□कलंक मेम्□ना कहा□

द्वारा लिखित सी.आई.सी.□म.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:51 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

यूहन्□ना ने कहा – उसके स्□वभाव में पाप नहीं□ पर उसके दुश्□मन और वरिोधियों ने भी उसे पाप रहति बताया□

डाकू जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ा उसने कहा, ''इसने कोई अपराध नहीं कयिा, यह नरि्दोष है''□

पीलातुस जसिने उसे मृत्□युदण्□ड दयिा उसने कहा – ''यह नरि्दोष है''□
उसका शष्□य यहूदा जसिने उसके साथ वशि्□वासघात कयिा उसने कहा – मैंने नरि्दोष का लोहू बहाया है□
और जसि सरदार ने उसे क्रूस पर चढ़ाया, सम्□भवत□ हाथ पांव में कीलें ठोंकी, उसने भी कहा – ''नशि्□चय यह नरि्दोष था'' ''नशि्□चय यह परमेश्□वर का पुत्र था''□ परमेश्□वर यदि मनुष्□य का रूप धारण करेगा तो नशि्□चय ही वह मनुष्□य पूर्णत□ पाप रहति होगा□

चौथी बात यह है – यदि ईश्□वर मनुष्□य बन जाये तो मनुष्□य रूप में वह ईश्□वरीय अलौककि शक्तियों का उपयोग, मानव हति के लि□ करेगा□

आश्□चर्यकर्म या चमत्□कारों के वषिय तो हम बहुत सुनते हैं कनि्□तु चमत्□कारों का उपयोग ईश्□वरीय गुणों की सहज सुन्□दर अभवि्□यक्ति के लि□ □वं मानव सेवा के लि□, जैसा यीशु मसीह ने कयिा वैसा अन्□यत्र नहीं दखिाई देता□

अपनी 40 दनिों की भूख और प्□यास मटिाने के लि□ पत्□थरों से रोटी बनाने से उसने इन्□कार कर दयिा कनि्□तु 5000 लोगों की □कदनि या तीन दनि की मटिाने के लि□ उसने आश्□चर्य कर्म कयिा□ अन्□धों को आंखें देकर, कोढ़ियों को शुद्धता देकर, बीमारों को चंगाई देकर उसने ईश्□वरीय प्रेम, अनुग्रह □वं सहृदयता की सुन्□दर, सहज अभवि्□यक्ति की□ उसके आश्□चर्यकर्म ईश्□वरीय गुणों की सहज सुन्□दर अभवि्□यक्ति थे□

पांचवी बात यह है कि – यदि ईश्□वर मानव बन जा□ तो उस मानव की भाषा, उसकी वाणी महानतम होगी, अद्□भुत होगी, अलौककि होगी, जीवनदायनिी होगी□

(लूक 4:32) में लखिा है – ''लोग यीशु की वाणी से चकति थे – वे कहते थे यह कतिने अधकिार से बोलता है''□ यीशु ने स्□वयं कहा

''स्□वर्ग और पृथ्□वी टल जा□गी पर मेरे वचन कभी टलेंगे नहीं'' (लूक 21:33)
वह घटना भी हम कैसे भूल सकते हैं जब महायाजक और फरीसयिों ने यीशु को पकड़ने सपिाही भेजे□ वे खाली हाथ लौट आ□□ उनसे पूछा गया – उसे क्□यों नहीं ला□? उन्□होंने कहा, उसकी बातें अद्□भुत हैं□ कसिी मनुष्□य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं□ वे उसकी वाणी पर मुग्□ध हो गये□ उन्□होंने अपनी नौकरी दांव पर लगाना उचति समझा, उन्□होंने अपना जीवन दांव पर लगाना उचति समझा, कनि्□तु उसे हाथ नहीं लगाया□

छठवीं बात यह है कि यदि ईश्□वर मानव बन जा□ वह मानव की आत्मकि भूख को तृप्□त करेगा□

यह तृप्त िलोगों को यीशु में मलिी□ उसका दावा था ऐसा — उसने कहा — ''धन्□य हैं जनिमें धार्मकिता के लि□ भूख और प्□यास है, वे तृप्□त हो जा□ंगे□ ''

''जो वह जल पयिेगा जो मैं उसे दूंगा वह अनन्□त तक प्□यासा न होगा□ ''
ऐसी आत्मकि तृप्त िलोगों ने प्राप्□त की□

सातवीं बात यह है कि — यदि ईश्□वर मानव बन जा□ तो उसके मानव बनने का उद्देश्□य महानतम् होगा, अनन्□त होगा□

अतवरण की इतनी बड़ी घटना छोटे-मोटे काम के लि□ नहीं, महानतम से महानतम उद्देश्□य क्□या हो सकता है? सम्□पूर्ण मानव जात िका उद्धार□ किसी □क व्□यक्त िया गोत्र या जात िका उद्धार नहीं — सम्□पूर्ण मानवता का उद्धार□ यही यीशु के अवतरण का उद्देश्□य था, यही यीशु के आने का उद्देश्□य था□

यही बड़े दनि का संदेश है, यही शुभ समाचार है, यही प्रचार है, यही सन्□देश है जो जन-जन तक पहुंचाना है कि ईश्□वर मानव बन गया□ अवतरण सत्□य है□ परमेश्□वर का प्रेम इतना असीम है कि वह असीम छोड़ कर हमारे उद्धार के लि□ सीमति मनुष्□य बन गया तो हमारा कर्तव्□य है कि हम उसके इस उद्धार के उपहार को स्□वीकार करें□ कृतज्ञता और धन्□यवाद के साथ स्□वीकार करें□

बड़ा दनि आपको यह आनन्□द दे□ बड़ा दनि आपको मुबारक हो□

अधकि जानकारी □वं पत्राचार पाठ्क्रम के लयि सम्□पर्क कीजयि□ -

साहति्□य □वं प्रकाशन वभिाग
सेन्□ट्रल इण्डयि क्रश्चियिन मशिन
पोस्□ट बाक्□स — 11, दमोह (म.प्र.) 470661 फोन : 07812-222500 फैक्□स : 07812-223301

परमेश्वर का मानव रूव में अवतरणः यीशु

द्वारा लखिति सी.आई.सी.एम.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:51 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

5 / 5